Electronic Interdisciplinary International Research Journal
(EIIRJ)
A Peer Reviewed Journal
SJIF Impact Factor 6.21 **ISSN : 2277-8721**

One Day National Level Conference

On

"वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में हिंदी भाषा, साहित्य तथा संस्कृति"

2nd February 2019

Organized by

Department of Hindi

Rajarshi Shahu Arts, Commerce and Science College Pathri.

Tq: Phulambri Dist : Aurangabad – 431111, (MS), India

Executive Editor	:	**Principal, Dr. S. B. Jadhav**
Chief Editor	:	**Dr. D. N. Phuke**
Co editor	:	**Mr. B. T. Shelke**

Scanned with CamScanner

Published by : Aarhat Publication & Aarhat Journal's

Mobile No : 9922444833 / 8355852142

28nd February 2019

ISSN : 2277- 8721

© Mitra Sadhana Shikshan Prasarak Mandal's
Rajarshi Shahu Arts, Commerce and Science College Pathri.

Executive Editor : **Principal, Dr. S. B. Jadhav**

Chief Editor : **Dr. D. N. Phuke**

Co editor : **Mr. B. T. Shelke**

EDITORS :

Disclaimer :

The views expressed herein are those of the authors. The editors, publishers and printers do not guarantee the correctness of facts, and do not accept any liability with respect to the matter published in the book. However editors and publishers can be informed about any error or omission for the sake of improvement. All rights reserved.

No part of the publication be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted any form or by any means electronic, mechanical, photocopying, recording and or otherwise without the prior written permission of the publisher and authors.

Scanned with CamScanner

भूमण्डलीकरण युग : साहित्य अध्ययन की आवश्यकता

प्रा. डॉ. आर डी. गवारे

हिंदी विभाग

आ.र.भा. गरूड कला, वाणिज्य एवं. विज्ञान महाविद्यालय, शेंदुर्णी

तह जामनेर जि. जलगॉव ४२४२०४

पृष्ठभूमि :–

वर्तमान समय एवं परिस्थीतियॉ गंभीर बनी हुई है । हर–दिन कई तरह की घटनाएँ घटित होती दिखाई दे रही है। अमानवीयता, झूठ आदि का बोलबाला है । मानवता को शर्मसार करनेवाली घटनाएँ बढती जा रही है । राजनीति, धर्म, समाज, राष्ट्र, परिवार इन सभी जगहों पर संघर्ष बढता जा रहा है । हमारी सामाजिक संवेदनाएँ दम तोड रही है । किसी बात पर घटना पर, प्रतिक्रिया देने से पहले विचार नहीं किया जाता । रिश्ते – नाते, मित्रता, अपनापन इन बातों को निभाने के लिए समय नही हैं । आदमी को आदमी पर भरोसा नहीं रहा । स्वतंत्रता के सत्तर सालों के उपरान्त भी बहुत सारी समस्याएँ वैसी की वैसी बनी पडी है । उपरी तौर पर भले ही परिवर्तन दिखाई दे रहा हो,लेकिन अंदरूनी अवस्था काफी बिकट है। भूमण्डलीकरण बाजार, अर्थ निति और विकास के नाम पर नया अर्थवाद सामने आ रहा है । बाहर से संपन्न और विकसित दिखनेवाला मनुष्य अपनी स्वार्थी प्रवृत्ति के कारण शैतान बनते जा रहा है । जिन क्षेत्रों को पवित्र और संस्कार देने का स्थान माना जाता था, ऐसे कई क्षेत्रों में भ्रष्टाचार और अनाचार फैला हुआ है । सामाजिक विसंगतियों को दूर कर मानवता के लिए काम करने की आवश्यकता है । संस्कार, सभ्यता एवं संस्कृति को बढाने हेतु समय रहते सचेत होने की आवश्यकता तीव्रता से महसूस हो रही है । इसमें हमारा इतिहास और साहित्य महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है, ऐसा मेरा पूरा विश्वास है । हमारे वीर पुरूषों का इतिहास बताकर लोगों को जगाना समय की मॉग है । हमारे संतो के विचारों को प्रचारित और प्रस्तारित करने की आवश्यकता है ।

" अंधकार है वहॉ, जहॉ आदित्य नहीं हैं
मूर्दा है वह देश, जहॉ साहित्य नहीं हैं।"

भाषा के माध्यम से साहित्य में मानव मन की भावनाओं को अभिव्यक्त किया जाता है, साथ ही भाषा एक दूसरे को जोडने का माध्यम भी है। परस्पर सुख–दुखों, आशा आकांक्षाओं आचार विचार, ज्ञान–विज्ञान, कला समस्त प्रकार की भावना, संस्कृति का भावना, वेषभूषा तथा समस्त चिंतन साहित्य में चित्रित होता है। आज भूमण्डलीकरण के दौरान एक मनुष्य दूसरे मनुष्य से कटता जा रहा है। उसकी दृष्टि व्यावहारिक हो गई है । हृदय की कोमल भावनाओं के विकास के अभाव में मानवता और विश्वबंधुता के प्रसार में बाधा उत्पन्न हो रही है, और केवल भौतिक प्रगति में आगे बढता हुआ मानव विश्व संघर्ष की ओर बढता जा रहा है । आज

Scanned with CamScanner

मानव की यह दशा है कि, वह मास्तिष्क के क्षेत्र में बढता ही गया है, किन्तु हद्य के क्षेत्र में उसकी प्रगति नही हुई हैं । मानव की भावनाओं को जगाने का काम साहित्य ही कर सकता है। साहित्य मानव जीवन के भावों एवं नित नवीन रहनेवाली चेतना की अभिव्यक्ति है । किसी काल विशेष के साहित्य की जानकारी से तद्युगीन मानव समाज को समग्रत: जाना जा सकता है। साहित्य की निरविछिन्न धारा सर्वदा अजस्त्र गति से प्रवाहित रहती है । प्रेमचंद जी साहित्य का उद्देश व्यक्ति में संस्कार उत्पन्न करना मानते थे । साहित्य का अध्ययन – अध्यापन सही ढंग से होना आज के इस युग की आवश्यकता है, अन्यथा सांस्कृतिक और नैतिक संकट आना अटल है ।

कोई भी राष्ट्र अपने पूराने किलों, मंदिरो, मस्जिदों, मीनारों और शिलालखों द्वारा ही जाना जाता है । उस राष्ट्र के लोग क्या सोचते है और विभिन्न परिस्थितीयों में कैसा व्यवहार करते है, इससे भी राष्ट्र की पहचान बनती है । आज देश के सार्वजनिक जीवन मे फैले भ्रष्टाचार, अनाचार तथा नैतिक पतन को देखकर लगता है देश के लोग शायद अपनी सांस्कृतिक परंपराओं से कट गए है । एक अलग ही प्रकार की संस्कृति विकसित हूई है । जिसमें क्षेत्रियता ,प्रांतियता, भाषावाद, जातीवाद, कुर्सीवाद, अवसरवाद आदि प्रमुख हो गये है, इस संकट की घडी में साहित्यकारों की जिम्नेदारी बढ गई है । वांछित परिवर्तन लाने के लिए साहित्य को महत्वपूर्ण भूमिका निभानी होगी ।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में साहित्य का अध्ययन करना और करवाना आनेवाली पिढी के लिए जरूरी है । इसके लिए साहित्य को हर शास्त्र में, हर विषय में, हर क्षेत्र में किसी में किसी न रूप में अंतर्भूत किया जाना आवश्यक है । आज के युग में सांस्कृतिक मूल्यों का रक्षण साहित्य द्वारा हो सकता है । संस्कृति में इस मानवीय जीवन के सभी पहलुओं पर विचार करते है, जो मनुष्य को मनुष्य बनाने में सहायक सिध्द होते है । मानव के आचार विचार, नैतिक मूल्य, उनके संस्कार, रूढी परंपराएँ मिलकर संस्कृति बनती है । ये सभी वस्तुएँ समाज के मानव द्वारा सम्पादित की जाती है । समाज और संस्कृति का प्रतिबिम्ब हमें वहाँ के साहित्य में मिलता है । सांस्कृतिक विरासत को साहित्य के माध्यम से जीवित रखा जा रहा जा सकता है । इसलिए हर क्षेत्र में साहित्य का अध्ययन आवश्यक है । आज देश के युवक दिशाहीन होकर भटक रहे हैं, उन्हें सही पथ दिखाने की आवश्यकता है । अध्यात्म और भारतीय संस्कृति की पहचान साहित्य से दूसरा और कोई नही करा सकता । मनुष्य की स्वार्थी प्रवृत्ती, ईर्ष्या, घृणा, द्वेष इन सबसे मनुष्य को उबारने के लिए साहित्यको व्यापक होना पडेंगा । पंडित हजारी प्रसाद द्विवेदी जी ने कहा था कि, "मैं साहित्य को मनुष्य की दृष्टि से देखने का पक्षपाती हूँ जो वागजाल मनुष्य को दूर्गतिहीनता, परमुखोपेक्षिता से बचा न सके उसकी आत्माको तेजोद्दीप्त न कर सके, जो उसे परदू:खकातर और संवेदनशील न बना सके उसे साहित्य कहने मे मुझे संकोच होता है । ऐसे साहित्य निर्माण की आवश्यकता है जिसमे मानव मानव को मानव की दृष्टि से देखे मनुष्य की मनुष्यता जागे और वह समान भाव से सभी से व्यवहार करे । भारतीय साहित्य में वह क्षमता है की जो समस्त भारत

Scanned with CamScanner

की धार्मीक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक विरासत को आगे आने वाली धार्मिक पिढी तक पहुँचा सकता है ।

हमारे भारतीय भाषाओं का विकास करना होगा । संस्कृत भाषामें लिखित साहित्य का अध्ययन करने से बहुत सारी समस्याओं का समाधान हो सकता है । भारतीय वाडमय संस्कृत परक है । डॉ. बी. राघवन ने कहाँ कि, भारत की प्रोदेशिक भाषओं में उत्कृष्ट साहित्य के प्रथम प्रयास संस्कृत के अनुवाद मात्र ही यह सभी भाषाएँ शब्द, राशि दार्शनिक एवं धार्मीक पृष्ठभूमि विषय और साहित्यक शैलियों के लिए संस्कृत पर ही पूरी तरह आश्रियथी । संस्कृत भारतीय संस्कृतिकी स्त्रोत भाषा रही है । संस्कृत मे भारतीय दर्शन , वेदांत, उपनिषद, तर्क व्याकारण, न्याय रसायन, चिकीत्सा धनुर्वेद, पूराण,ज्ञान विज्ञान संबंधी समस्या साहित्य उपलब्ध है । इस साहित्स का हर भाषा में अनुवाद करना आज अनिवार्य बना गया है । बिखरते परिवार, टूटते मूल्य, संस्कारहीनता, संस्कृति का अवमूल्यन, बडो का अनम्नान इस बातों का परिणाम कहीं न कही बढता जा रहा है। आज के इस वातावरण मे हमारे पूराने आदर्शोकी हमारे साहित्य के माध्यम से सचेत करना होगा । साहित्य ही एक ऐसा माध्यम है जो बच्चों से लेकर बढों को सही दिशा दिखा सकता है ।

मनुष्य का मन समुद्र की तरह है । जिसि तरह समुद्र में एक लहर आती है और जाती है सयह स्थिती हमारे मन की है । उसमें कभी हर्ष, विषाद, दूख: तो कभी सुख की लहरे उठती है । जिनके पास उचित – अनुचित, अच्छे–बूरे तथा कर्तव्य – अकर्तव्य को परखने का ज्ञान है वही इस समुद्र से उबर कर किनारे लगने में सफल होते है । आज आप किसी युवासे पूछिए, तो सुनने को मिलेगा कि, आज काम करने का मन नही है । आज सभी मन के वशीभूत हो गए है । कबीर इस मनेविज्ञान को समझते है, वे चेतावनी देते है ।

मन के मते न चलिए, मन के मते अनेक ।
जो मन के अवसार है, सो साधु कोई एक ।।

मन को सही मार्ग पर लाने का काम साहित्य द्वारा ही हो सकता है । साहित्य के द्वारा ही व्यक्ति और समाज का निर्माण किया जा सकता है । सतसाहित्य आचरण को गढता है , मनो–विकारों पर अंकुश लगाता है, सन्मार्ग की और प्रेरित करता है ।

निष्कर्ष :– आज के इस यांत्रिकता के युग में, भूमण्डलीकरण के दोर में, लेखक को, साहित्य के अध्ययन और अध्यापन कर्ताओं को अपनी जिम्मेदारी को समझना होगा और प्रभावी रूपसे साहित्य को समाज के सामने रखना होगा । यह आज के समय की मॉग है और आवश्यकता भी । साहित्य मे व्यक्ति को और समाज को प्रभावित करने की अपार क्षमता होती है । हमारी भारतीय भाषाओं का विकास करना होगा । सभी भषाओं में साहित्य प्रसार करना होगा । ऐसा करने पर ही एक नये युग का आविष्कार होगा जिसमें सभी एकता और प्रेम के साथ रह सकेंगे । इसलिए आज साहित्य की आवश्यकता समाज, देश और दुनिया को है । भाग–दौड भरी जिंदगी में नैतिक मूल्यों और सांस्कृतिक मूल्यों को साहित्य के माध्यम से ही गढा सकता है ।

Scanned with CamScanner

संदर्भ सूची :–

१) कलम का सिपाही – अमृतराय

२) साहित्य की आवश्यकता – शांती कुमार

३) संस्कृति – चिंतन की प्रासंगिकता – प्रो. रामचंन्द्र माली (मधुमती, अक्तुबर ११९७)

४) भारतीय साहित्य रत्नमाला – डॉ. वी. राघवन

५) भाषा और संस्कृति (लेख) – बलि रेड्डी (राजाभाषा भारती, ०८)

Scanned with CamScanner